



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	19-10-24	2	1-4

दैनिक भास्कर

भास्कर खास • एचएयू में भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना पर की बैठक
पैदावार बढ़ाने को मसालों की 7 किस्मों की पहचान

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में 35वें अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक में मसाला फसलों की सात नई किस्मों की पहचान की गई। बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों के 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

आईसीएआर के सहायक महानिदेशक बागवानी विभाग डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार

इन नई किस्मों की सिफारिश

- धनिया फसल की करण धनिया-1
- जीरा की जोधपुर जीरा-1
- काजरी जीरा-1
- सौंफ की गुजरात-13
- अदरक की एसएएस-केवू
- हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या
- मेथी की आरएमटी-259

करनी होंगी। इसी कड़ी में राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में 3 दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने कहा कि बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया।

अदरक, हल्दी, छोटी और बड़ी इलाइची की पैदावार बढ़ाने पर जोर

नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी। नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की सिफारिश की है। इनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पाच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टैबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कृषि	19-10-24	३	३-६

मसाला फसलों की 7 नई किस्मों की हुई पहचान

इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौफ़, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मसाले वाली फसलों की बढ़ेगी पैदावार

मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश

हिसार, 18 अक्टूबर (ब्लू): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वाँ अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया।

बैठक में आई.सी.ए.आर. के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मर्थन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली 7 नई किस्मों की पहचान की गई। इनमें धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौफ़ की गुजरात-13, अदरक की एस.ए.एस.-केवू, हल्दी की आई.आई.एस.आर.-सूर्या, मेथी की आर.एम.टी.-259 शामिल हैं।

इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौफ़, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी।



बैठक को संबोधित करते डॉ. सुधाकर पांडे।

तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भैंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है।

दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मुदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

बैठक में मसालों को लेकर वैज्ञानिकों ने रखे विचार

बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एस.के.सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी.प्रसाथ के अलावा डॉ. एन.कृष्णा कुमार, डॉ. के.वी.पार्थसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सम्यक्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकीयों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनेकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे

कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। साथ ही आगामी समय में लगाए जाने वाले नए प्रयोगों, प्रोजेक्ट बताने व किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीर्घ भूमि	१९-१०-२५	११	२-६

हकूमि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न

मसाला फसलों में 7 नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार

देशभर से 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से 150 से अधिक वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया

हरिभूमि न्यूज || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एस.के. सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोशीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, ग्रामीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के



हिसार। बैठक को संबोधित करते डॉ. सुधाकर पांडे

फोटो : हरिभूमि

नई किस्मों की पहचान द्वारा बढ़ेगी पैदावार

हिसार। उपायुक्त प्रदीप दहिया ने बताया कि प्रदेश में परंपरागत खेती के जोखिमों को कम करने व फसल विविधिकरण के तहत खेती कर रहे किसानों को आर्थिक मजबूती प्रदान करने के लिए बागवानी विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के बाग लगाने के लिए किसानों को अनुदान राशि दी जा रही है। दहिया ने बताया कि अनुदान योजना के तहत जिले में नीबू, वर्गीय फल व अमरुद का बाग लगाने वाले किसानों के लिए प्रदेश सरकार द्वारा बागवानी के क्षेत्रों के बढ़ाने के लिये विशेष अनुदान योजना लागू की गई है। बागों के लिए (अमरुद, नीबू, वर्गीय स्ट्रोबेरी आदि) 43 हजार रुपये प्रति एकड़ अनुदान राशि का प्रोत्साहन है। एम आई डी एच रकीम की गाहड़ लाइन के तहत पहले साल 23 हजार रुपये व दूसरे व तीसरे साल 10-10 हजार रुपये रख रखाव के लिये अनुदान राशि के रूप में दिए जाएंगे।

प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन. कृष्ण कुमार, डॉ. केवी पार्थसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखें।

मसाला फसलों पर कान करने के लिए किया प्रेरित
देशभर से आए मसाला फसलों पर

काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति

इन नई किस्मों की हुई पहचान

इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन बाले मंथन रंग मसाले वाली फसलों की उच्च वृणवता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नई किस्मों की पहचान की गई। हजारे धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौफ की गुजरात-13, अदरक की एसएस-कटू, छत्वारी की आईआईएसआर-सूर्यो तथा मेथी की आरएमटी-259 की पहचान हुई है। हजारे धनिया की पहचान से धनिया, जीरा, सौफ, अदरक, छत्वारी व मेथी जीरी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी।

पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की सिफारिश

इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भारतीय से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राझोज की ट्रॉइकोडरमा ट्रॉइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाहावी की फसल को राहजोम सड़ल बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल द्वारा का छिक्काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाहावी की फसल में मलविंग करके मृदा की बमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शक्ति रहा। हजारे धनिया की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी : प्रो. कामबोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ली आर. कामबोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकीयों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेखल दाढ़ों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशेष वृणवता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किसीको के एकीकृत किया जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों बाले छत्वारी बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई प्रस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।

सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक सहनशील किस्में तैयार करनी एवं अबायोटिक तनाव के प्रति होंगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक फ़िल्पुन	19-10-24	५	३-४

मसाला फसलों की सात नयी किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार

हिसार, 18 अक्टूबर (ए)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शुक्रवार को 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। बैठक में मसाला फसलों की सात नयी किस्मों की पहचान की जानकारी दी गई, जो पैदावार बढ़ाएगी। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्राप्ति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया।

बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नयी किस्मों की पहचान की गई। इनमें धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13, अदरक की एसएस-केवू, हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या, मेथी की आरएमटी-259 शामिल हैं।

कृषि तकनीकों की भी सिफारिश

इन नयी किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी

व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नयी कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नयी कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी। तीन दिन चली बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोडिनेटर डॉ. डी. प्रसाद के अलावा डॉ. एन कृष्ण कुमार, डॉ. केवी पार्थसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘अजीत समाचार’	१९-१०-२४	५	५-८

हफ्ते में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक सम्पन्न

हिसार, 18 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड़ के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्ण कुमार, डॉ. केवी पार्थसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ.



बैठक को सम्बोधित करने हुए डा. सुधाकर पांडे।

के लिए मसाले वाली फसलों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने के लिए निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई। धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13, अदरक की एसएएस-केवू हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या व मेथी की आरएमटी-259। इन नई किस्मों की

फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकीयों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके।

तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। साथ ही आगामी समय में लगाए जाने वाले नए प्रयोगों, प्रोजेक्ट बनाने व किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाले वाली फसलों का विभिन्न भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला और अधिकारियों का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	18.10.2024	---	--

एचएयू में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न, सात नई किस्मों की हुई पहचान

विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन तक इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान



बैठक को संबोधित करते हैं डॉ. सुधाकर पांडे

संस्थान, कोडीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीप मसाला अनुसंधान केन्द्र अंग्रेज के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डॉ. प्रसाथ

के अलावा हैं। एन कृष्ण कुमार, डॉ. केवी पार्थसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार स्वेच्छा देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया।

इन किस्मों की हुई पहचान

धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौफ की गुजरात-13, अदरक की एसएस-केबू हल्दी की आईआईएमआर-सूर्य मरी की आएमटी-259

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बड़ी पैदावार : डॉ. सुधाकर पांडे

बैठक में आईआईएआर के महायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि

कि जलवाय परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवाय परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोपणाधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की व्यापक सम्मुख बैठक में तीन दिन चले वर्धन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नई किस्मों की पहचान की गई।

विश्वविद्यालय के कुलपति ग्रो. वी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर

विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सम्भावित विकसित कारन, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कौटनाशक अवरोधों, सेवल द्वारा, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तौलता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशेष गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। इस राष्ट्रीय स्तर की व्यापक सम्मुख बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया।



चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	18.10.2024	---	--

हक्कि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न हुई।

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार: डॉ. पांडे

पांच बजे ब्लॉग

हिसार। चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन विवरणीय व्यापिक समालों के बैठक में दो दिन चली हुई। इस बैठक में दो दिन के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्राप्ति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एम्से. सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोडीकोड के निदेशक डॉ. आर. दिनेश, राष्ट्रीय वैज्ञानिक मसाला अनुसंधान केन्द्र अध्यक्ष डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना के मसाला फसल के प्राप्ति कोइंटर के उप-महानिदेशक डॉ. डी. प्रसाध के अलावा डॉ. एन. राधाराम कृष्ण केराणी वैज्ञानिकों ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में आने विचार रखे तथा देशभर में आए मसाला फसलों के काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रति किया।

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार: डॉ. सुपाकर पांडे

बैठक में आईआईएस विभाग के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुपाकर पांडे ने कहा कि जलवायी परिवर्तन से उत्तर चुनौतियों सहित भविष्य में



2. जीरा की ओष्ठपुर जीरा-1.
 3. काजरी जीरा-
 4. सौफ की बजरात-13.
 5. अदरक की एसएसएम-केबु.
 6. हल्दी की आईआईएसआर-सूर्य
 7. मट्टी की आरएमटी-259
- इन नई किस्मों की पहचान से बदलियाँ बदली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई:
1. बनिया फसल की करण धनिया-1,

की अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिस्टमिकी की गई, जिसमें भूड़ारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राहजोगी की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंतर्कृष्ण दर में सूधार करके उपचार बढ़ावा जा सकती है। दूसरी सिस्टमिकी में हल्दीवाली फसलों की पैदावार बढ़ाने में बढ़ी रुक्षता विस्तृत किया गया। सबसी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम्से. तेलाना ने कहा कि आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	19.10.2024	---	--

हकूमि कुलपति ने कर्मचारियों को दिवाली पर दिया पदोन्नतियों का तोहफा

- 23 कर्मचारी वर्कर से बने सहायक

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढ़ी

हिसार, 18 अक्टूबर : एग्रीकल्पचर युनिवर्सिटी नॉन टीचिंग स्टाफ एसोसिएशन की एक आवश्यक बैठक चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। बैठक में हकूमि के कुलपति प्रो. बी.आर. कंबोज द्वारा की गई पदोन्नतियों पर खुशी व्यक्त की गई।

एसोसिएशन पदाधिकारियों ने बताया कि इन पदोन्नतियों से कर्मचारियों में खुशी की लाहर है। इन पदोन्नतियों में कुल सचिव डॉ. पवन कुमार की भी अहम भूमिका रही है। कुल सचिव डॉ. पवन कुमार को कड़ी मेहनत से एल.एस. एग्जाम पास कर्मचारियों को समय पर पदोन्नति दी गई। पदोन्नति पाने वाले कर्मचारियों में राकेश, शकुंतला, आनंद, पूजा, विक्रम पाल, सुभाष, मंजू बाला, कुलदीप, सुरेंद्र सिंह, मंदीप, अंकुश, अनिल, विकास, बजरंग, शिक्षा देवी, मनोषा, अनिल, हनुमान सिंह, पिंकु कुमार, उद्देश कुमार, अजय कुमार, सुमित बागड़ी, मनीष पूनिया शामिल

हैं। इसी प्रकार एक अन्य कर्मचारी साहिल नस्ला को जूनियर स्कूल स्टेनोग्राफर से सीनियर स्कैल स्टेनोग्राफर के पद पर पदोन्नत किया गया है। अनुसंधान निदेशक कार्यालय से भी तीन कर्मचारियों को कृषि निरीक्षक से तकनीकी सहायक के पद पदोन्नत मिली है जिनमें मनोहर लाल, कृष्ण कुमार, देवी लाल शामिल हैं।

एसोसिएशन के प्रधान सुनील कुमार ने कहा कि प्रो. बी.आर. कंबोज जब से हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति बने हैं तब से विश्वविद्यालय में बिना भेदभाव के कर्मचारियों को पदोन्नत किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रो. बी.आर. कंबोज कुलपति व डॉ. पवन कुमार कुलसचिव का आभार व्यक्त किया गया। बैठक में प्रधान सुनील कुमार, महासचिव राजकुमार गंगवानी व उपप्रधान जोगिंद्र सिंह, उपप्रधान महेंद्र कुमार खुराना, सह सचिव आशीष शर्मा, प्रेस सचिव सुरेंद्र राणा, कार्यालय सचिव वीरपाल, कैशियर रामप्रताप जांगड़ा, ऑफिटर, सुनील पंडित, कार्यकारिणी सदस्य औमप्रकाश, नवीन सध्ववाल आदि मौजूद थे।